



# Khushbu kumari

24 Jul 2002

05:30 PM

Kodarma

Model: Web-MyKundli

Order No: 121634901

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 24/07/2002  
दिन \_\_\_\_\_: बुधवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 17:30:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 30:44:27 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Kodarma  
राज्य \_\_\_\_\_: Jharkhand  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 24:28:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 85:36:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: 00:12:24 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 17:42:24 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:06:29 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 13:50:34 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 05:12:13 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:35:34 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 13:23:22 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: उत्तर  
ऋतु \_\_\_\_\_: वर्षा  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 07:32:01 कर्क  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 21:32:45 धनु

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: धनु - गुरु  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: मकर - शनि  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: उत्तराषाढा - 4  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: सूर्य  
योग \_\_\_\_\_: प्रीति  
करण \_\_\_\_\_: बालव  
गण \_\_\_\_\_: मनुष्य  
योनि \_\_\_\_\_: नकुल  
नाड़ी \_\_\_\_\_: अन्त्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: वैश्य  
वश्य \_\_\_\_\_: जलचर  
वर्ग \_\_\_\_\_: सिंह  
युँजा \_\_\_\_\_: अन्त्य  
हंसक \_\_\_\_\_: भूमि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: जी-जीवन  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: रजत - ताम्र  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: सिंह

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1924	श्रावण	2
पंजाबी	संवत : 2059	श्रावण	9
बंगाली	सन् : 1409	श्रावण	8
तमिल	संवत : 2059	आदी	8
केरल	कोल्लम : 1177	कर्कदम	8
नेपाली	संवत : 2059	श्रावण	9
चैत्रादि	संवत : 2059	आषाढ़	शुक्ल 15
कार्तिकादि	संवत : 2059	आषाढ़	शुक्ल 15

### पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 15  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 14:36:59  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 1  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : उत्तराषाढ़ा  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 19:28:29 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : उत्तराषाढ़ा  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : विष्कुम्भ  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 11:59:18 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : प्रीति  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : बव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 14:36:59 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : बालव  
भयात \_\_\_\_\_ : 57:22:06  
भभोग \_\_\_\_\_ : 62:18:18  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : सूर्य 0 वर्ष 5 मा 20 दि

### घात चक्र

मास \_\_\_\_\_ : वैशाख  
तिथि \_\_\_\_\_ : 4-9-14  
दिन \_\_\_\_\_ : मंगलवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : रोहिणी  
योग \_\_\_\_\_ : वैधृति  
करण \_\_\_\_\_ : शकुनि  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 4  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मृग  
लग्न \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
सूर्य \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : सिंह  
मंगल \_\_\_\_\_ : मीन  
बुध \_\_\_\_\_ : धनु  
गुरु \_\_\_\_\_ : मेष  
शुक्र \_\_\_\_\_ : वृष  
शनि \_\_\_\_\_ : मकर  
राहु \_\_\_\_\_ : मिथुन

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

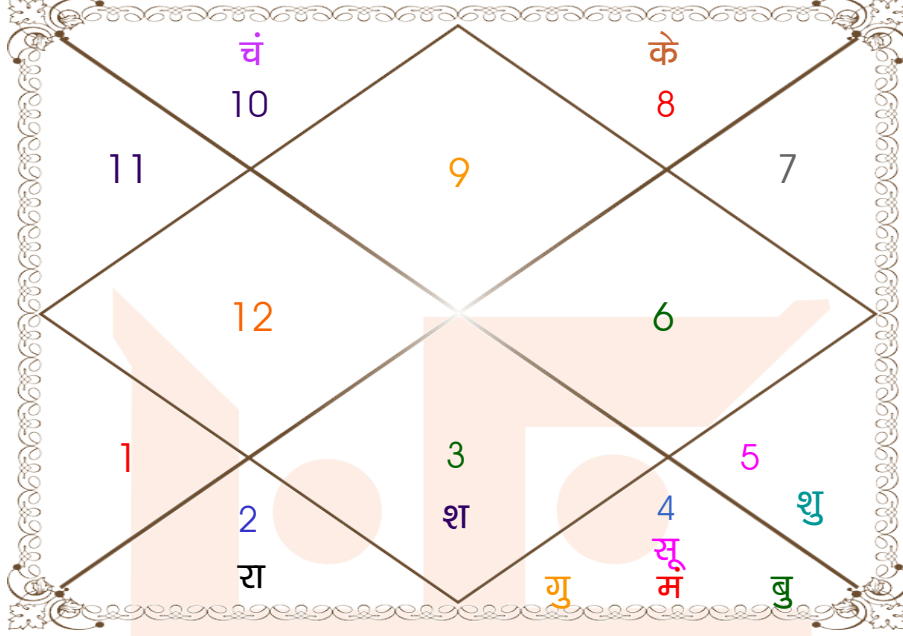
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

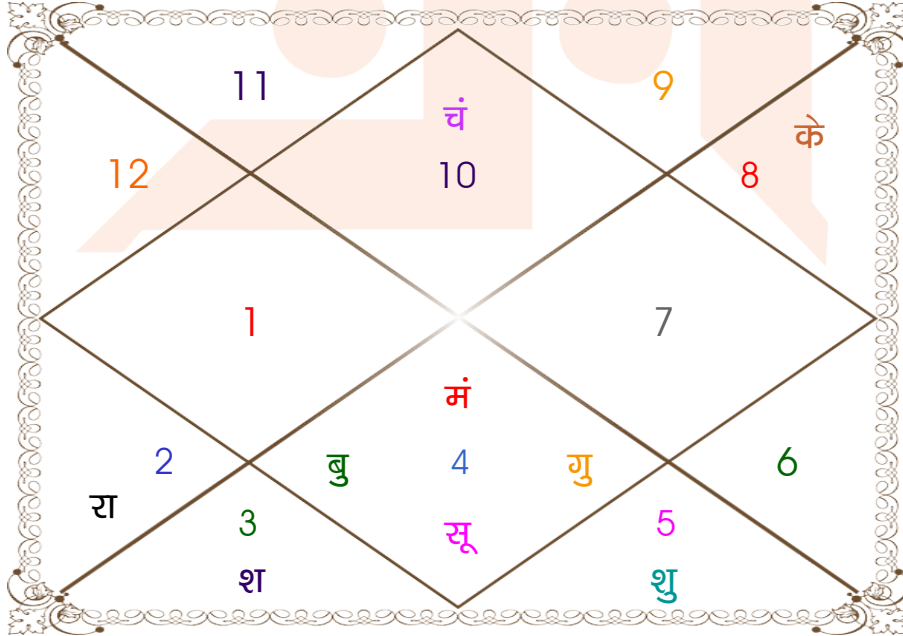
9835195382

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

		रा	श
			बु सू मं गु
चं			शु
ल	के		

## लग्न कुंडली

	रा		
श			
सू	मं		चं
बु	गु		
शु			ल
			के

विंशोत्तरी  
सूर्य 0वर्ष 5मा 20दि  
सूर्य

24/07/2002

13/01/2117

सूर्य	13/01/2003
चन्द्र	12/01/2013
मंगल	13/01/2020
राहु	12/01/2038
गुरु	12/01/2054
शनि	12/01/2073
बुध	12/01/2090
केतु	12/01/2097
शुक्र	13/01/2117

योगिनी  
संकटा 0वर्ष 7मा 16दि  
सिद्धा

10/03/2024

11/03/2031

सिद्धा	20/07/2025
संकटा	08/02/2027
मंगला	21/04/2027
पिंगला	10/09/2027
धान्या	10/04/2028
भामरी	19/01/2029
भद्रिका	09/01/2030
उल्का	11/03/2031

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

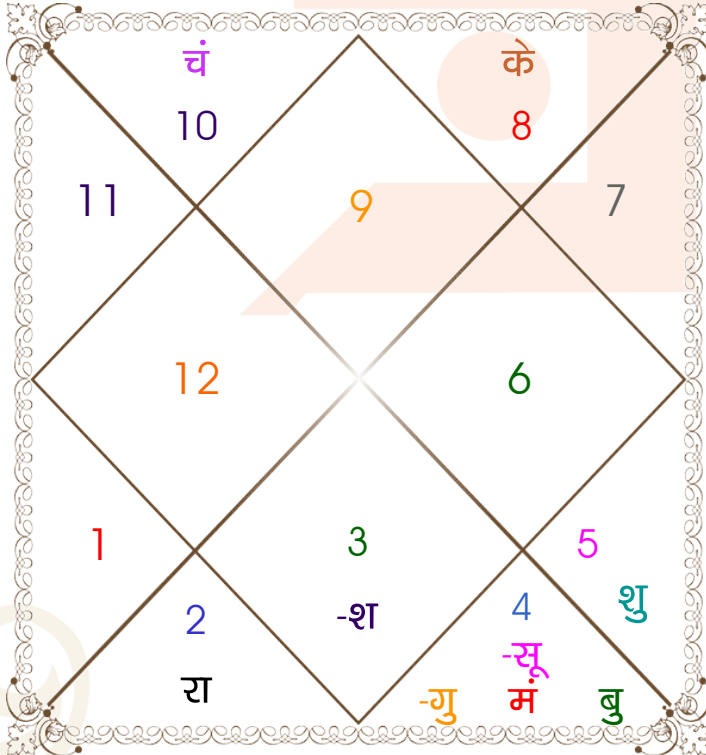
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	21:32:45	356:34:40	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	---
सूर्य			कर्क	07:32:01	00:57:17	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	केतु	मित्र राशि
चंद्र			मक	08:57:07	12:44:50	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	सम राशि
मंगल	अ		कर्क	13:04:39	00:38:25	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	राहु	नीच राशि
बुध	अ		कर्क	11:27:44	02:04:14	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	चंद्र	शत्रु राशि
गुरु	अ		कर्क	04:16:58	00:13:23	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	उच्च राशि
शुक्र			सिंह	21:15:32	01:05:36	पूर्वाफाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि
शनि			मिथु	00:09:24	00:06:45	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	बुध	मित्र राशि
राहु	व		वृष	23:15:42	00:06:38	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	सूर्य	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	23:15:42	00:06:38	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	चंद्र	मित्र राशि
हर्ष	व		कुंभ	03:58:31	00:02:03	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	शुक्र	---
नेप	व		मक	15:55:34	00:01:36	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	शनि	---
प्लूटो	व		वृश्चि	21:17:26	00:00:58	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	---
दशम भाव			तुला	05:49:36	--	चित्रा	--	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	--

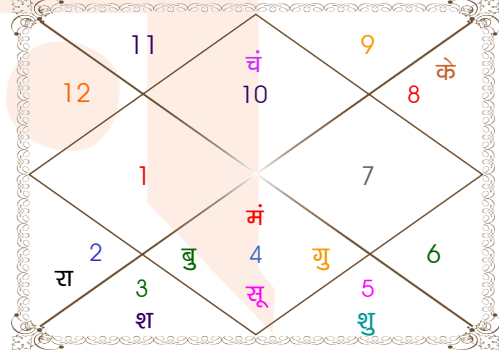
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:53:19

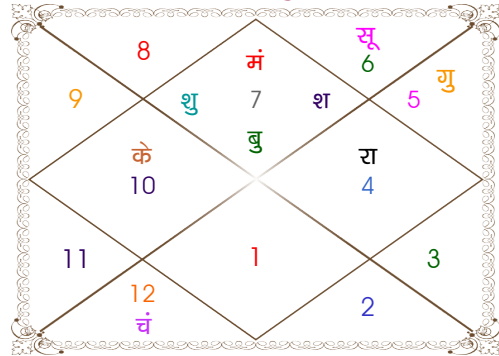
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 08:55:33	धनु 21:32:45
2	मकर 08:55:33	मकर 26:18:22
3	कुम्भ 13:41:11	मीन 01:03:59
4	मीन 18:26:48	मेष 05:49:36
5	मेष 18:26:48	वृष 01:03:59
6	वृष 13:41:11	वृष 26:18:22
7	मिथुन 08:55:33	मिथुन 21:32:45
8	कर्क 08:55:33	कर्क 26:18:22
9	सिंह 13:41:11	कन्या 01:03:59
10	कन्या 18:26:48	तुला 05:49:36
11	तुला 18:26:48	वृश्चिक 01:03:59
12	वृश्चिक 13:41:11	वृश्चिक 26:18:22

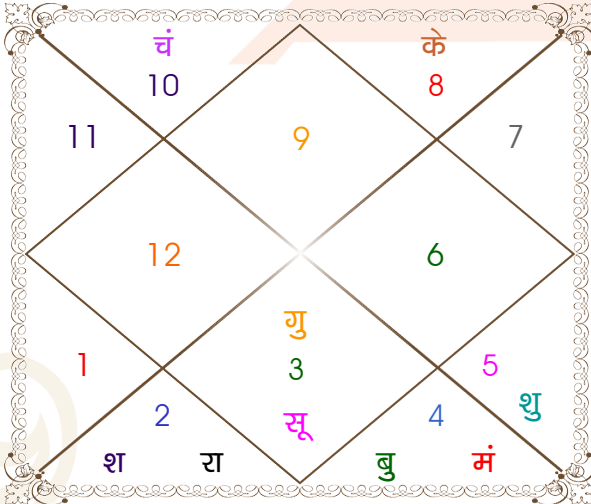
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	21:32:45
2	मकर	26:49:05
3	मीन	03:21:22
4	मेष	05:49:36
5	वृष	02:57:46
6	वृष	27:04:27
7	मिथुन	21:32:45
8	कर्क	26:49:05
9	कन्या	03:21:22
10	तुला	05:49:36
11	वृश्चिक	02:57:46
12	वृश्चिक	27:04:27

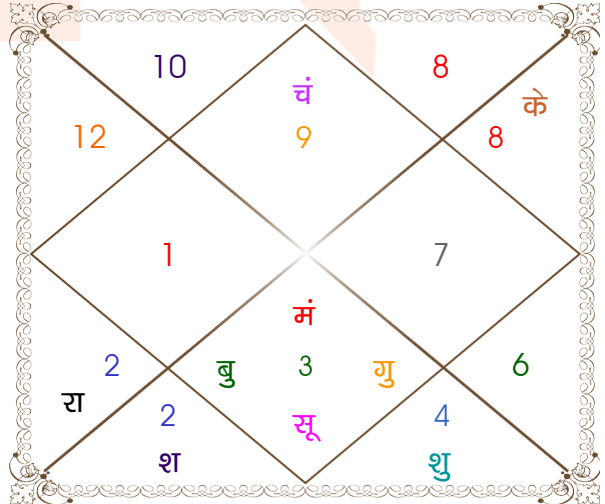
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 0 वर्ष 5 मास 20 दिन

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
24/07/2002	13/01/2003	12/01/2013	13/01/2020	12/01/2038
13/01/2003	12/01/2013	13/01/2020	12/01/2038	12/01/2054
00/00/0000	चंद्र 13/11/2003	मंगल 10/06/2013	राहु 25/09/2022	गुरु 01/03/2040
00/00/0000	मंगल 13/06/2004	राहु 29/06/2014	गुरु 18/02/2025	शनि 13/09/2042
00/00/0000	राहु 13/12/2005	गुरु 05/06/2015	शनि 25/12/2027	बुध 19/12/2044
00/00/0000	गुरु 14/04/2007	शनि 13/07/2016	बुध 14/07/2030	केतु 25/11/2045
00/00/0000	शनि 12/11/2008	बुध 11/07/2017	केतु 01/08/2031	शुक्र 26/07/2048
00/00/0000	बुध 14/04/2010	केतु 07/12/2017	शुक्र 01/08/2034	सूर्य 14/05/2049
00/00/0000	केतु 13/11/2010	शुक्र 06/02/2019	सूर्य 26/06/2035	चंद्र 13/09/2050
24/07/2002	शुक्र 13/07/2012	सूर्य 14/06/2019	चंद्र 25/12/2036	मंगल 20/08/2051
शुक्र 13/01/2003	सूर्य 12/01/2013	चंद्र 13/01/2020	मंगल 12/01/2038	राहु 12/01/2054

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
12/01/2054	12/01/2073	12/01/2090	12/01/2097	13/01/2117
12/01/2073	12/01/2090	12/01/2097	13/01/2117	25/07/2122
शनि 15/01/2057	बुध 11/06/2075	केतु 10/06/2090	शुक्र 15/05/2100	सूर्य 03/05/2117
बुध 25/09/2059	केतु 07/06/2076	शुक्र 11/08/2091	सूर्य 15/05/2101	चंद्र 01/11/2117
केतु 03/11/2060	शुक्र 08/04/2079	सूर्य 16/12/2091	चंद्र 14/01/2103	मंगल 09/03/2118
शुक्र 04/01/2064	सूर्य 12/02/2080	चंद्र 16/07/2092	मंगल 15/03/2104	राहु 01/02/2119
सूर्य 16/12/2064	चंद्र 14/07/2081	मंगल 13/12/2092	राहु 15/03/2107	गुरु 20/11/2119
चंद्र 17/07/2066	मंगल 11/07/2082	राहु 31/12/2093	गुरु 13/11/2109	शनि 01/11/2120
मंगल 26/08/2067	राहु 27/01/2085	गुरु 07/12/2094	शनि 13/01/2113	बुध 07/09/2121
राहु 02/07/2070	गुरु 05/05/2087	शनि 16/01/2096	बुध 14/11/2115	केतु 13/01/2122
गुरु 12/01/2073	शनि 12/01/2090	बुध 12/01/2097	केतु 13/01/2117	शुक्र 25/07/2122

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 0 वर्ष 5 मा 21 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>राहु - शनि</b> 18/02/2025 25/12/2027	<b>राहु - बुध</b> 25/12/2027 14/07/2030	<b>राहु - केतु</b> 14/07/2030 01/08/2031	<b>राहु - शुक्र</b> 01/08/2031 01/08/2034	<b>राहु - सूर्य</b> 01/08/2034 26/06/2035
शनि 01/08/2025 बुध 27/12/2025 केतु 26/02/2026 शुक्र 18/08/2026 सूर्य 09/10/2026 चंद्र 04/01/2027 मंगल 06/03/2027 राहु 09/08/2027 गुरु 25/12/2027	बुध 05/05/2028 केतु 29/06/2028 शुक्र 01/12/2028 सूर्य 17/01/2029 चंद्र 04/04/2029 मंगल 29/05/2029 राहु 15/10/2029 गुरु 16/02/2030 शनि 14/07/2030	केतु 05/08/2030 शुक्र 08/10/2030 सूर्य 27/10/2030 चंद्र 28/11/2030 मंगल 21/12/2030 राहु 16/02/2031 गुरु 08/04/2031 शनि 08/06/2031 बुध 01/08/2031	शुक्र 31/01/2032 सूर्य 26/03/2032 चंद्र 25/06/2032 मंगल 28/08/2032 राहु 08/02/2033 गुरु 04/07/2033 शनि 25/12/2033 बुध 29/05/2034 केतु 01/08/2034	सूर्य 18/08/2034 चंद्र 14/09/2034 मंगल 03/10/2034 राहु 21/11/2034 गुरु 04/01/2035 शनि 25/02/2035 बुध 13/04/2035 केतु 02/05/2035 शुक्र 26/06/2035
<b>राहु - चंद्र</b> 26/06/2035 25/12/2036	<b>राहु - मंगल</b> 25/12/2036 12/01/2038	<b>गुरु - गुरु</b> 12/01/2038 01/03/2040	<b>गुरु - शनि</b> 01/03/2040 13/09/2042	<b>गुरु - बुध</b> 13/09/2042 19/12/2044
चंद्र 11/08/2035 मंगल 11/09/2035 राहु 03/12/2035 गुरु 14/02/2036 शनि 10/05/2036 बुध 27/07/2036 केतु 28/08/2036 शुक्र 27/11/2036 सूर्य 25/12/2036	मंगल 16/01/2037 राहु 15/03/2037 गुरु 05/05/2037 शनि 04/07/2037 बुध 28/08/2037 केतु 19/09/2037 शुक्र 22/11/2037 सूर्य 11/12/2037 चंद्र 12/01/2038	गुरु 26/04/2038 शनि 28/08/2038 बुध 16/12/2038 केतु 30/01/2039 शुक्र 09/06/2039 सूर्य 18/07/2039 चंद्र 21/09/2039 मंगल 06/11/2039 राहु 01/03/2040	शनि 26/07/2040 बुध 04/12/2040 केतु 27/01/2041 शुक्र 30/06/2041 सूर्य 15/08/2041 चंद्र 01/11/2041 मंगल 25/12/2041 राहु 12/05/2042 गुरु 13/09/2042	बुध 08/01/2043 केतु 25/02/2043 शुक्र 13/07/2043 सूर्य 24/08/2043 चंद्र 01/11/2043 मंगल 19/12/2043 राहु 21/04/2044 गुरु 10/08/2044 शनि 19/12/2044
<b>गुरु - केतु</b> 19/12/2044 25/11/2045	<b>गुरु - शुक्र</b> 25/11/2045 26/07/2048	<b>गुरु - सूर्य</b> 26/07/2048 14/05/2049	<b>गुरु - चंद्र</b> 14/05/2049 13/09/2050	<b>गुरु - मंगल</b> 13/09/2050 20/08/2051
केतु 08/01/2045 शुक्र 05/03/2045 सूर्य 22/03/2045 चंद्र 20/04/2045 मंगल 10/05/2045 राहु 30/06/2045 गुरु 14/08/2045 शनि 07/10/2045 बुध 25/11/2045	शुक्र 06/05/2046 सूर्य 24/06/2046 चंद्र 13/09/2046 मंगल 09/11/2046 राहु 04/04/2047 गुरु 12/08/2047 शनि 13/01/2048 बुध 30/05/2048 केतु 26/07/2048	सूर्य 09/08/2048 चंद्र 03/09/2048 मंगल 20/09/2048 राहु 02/11/2048 गुरु 11/12/2048 शनि 27/01/2049 बुध 09/03/2049 केतु 26/03/2049 शुक्र 14/05/2049	चंद्र 23/06/2049 मंगल 22/07/2049 राहु 03/10/2049 गुरु 07/12/2049 शनि 22/02/2050 बुध 02/05/2050 केतु 30/05/2050 शुक्र 19/08/2050 सूर्य 13/09/2050	मंगल 03/10/2050 राहु 23/11/2050 गुरु 07/01/2051 शनि 02/03/2051 बुध 19/04/2051 केतु 09/05/2051 शुक्र 05/07/2051 सूर्य 22/07/2051 चंद्र 20/08/2051

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र  
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382  
9835195382

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	8
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 8
शत्रु अंक	1, 7,
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	कन्या, तुला
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	नृसिंह
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

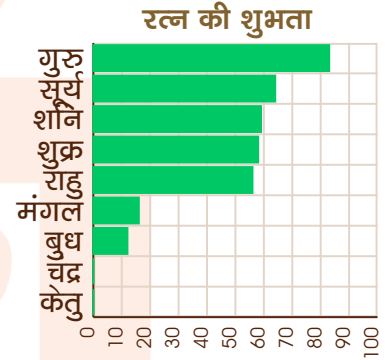
9835195382

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	83%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, सुख
माणिक्य	सूर्य	64%	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
नीलम	शनि	59%	दम्पति, धन, पराक्रम
हीरा	शुक्र	58%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन
गोमेद	राहु	56%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	16%	दुर्घटना, सन्तति कष्ट, व्यय
पन्ना	बुध	12%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट, व्यावसायिक हानि
मोती	चंद्र	0%	धन हानि, दुर्घटना
लहसुनिया	केतु	0%	व्यय, दुर्घटना



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	13/01/2003	77%	12%	28%	12%	89%	41%	44%	38%	0%
चंद्र	12/01/2013	70%	25%	16%	25%	83%	58%	59%	38%	0%
मंगल	13/01/2020	70%	12%	41%	0%	89%	58%	59%	38%	3%
राहु	12/01/2038	52%	0%	0%	12%	83%	64%	66%	69%	0%
गुरु	12/01/2054	70%	12%	28%	0%	95%	41%	59%	56%	0%
शनि	12/01/2073	52%	0%	0%	25%	83%	64%	72%	62%	0%
बुध	12/01/2090	70%	0%	16%	38%	83%	64%	59%	56%	0%
केतु	12/01/2097	52%	0%	28%	12%	83%	64%	44%	38%	16%
शुक्र	13/01/2117	52%	0%	16%	25%	83%	70%	66%	62%	3%

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----

### द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----

### तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086 08/02/2087-18/07/2088 31/10/2088-05/04/2089	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	बदनामी
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	धन
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	पराक्रम
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	सन्तति कष्ट

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपके जन्म समय में मंगल जन्म कुंडली में अष्टम भाव में स्थित है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। परन्तु आपकी कुण्डली में शास्त्रानुसार मंगली दोष समाप्त हो जाता है अतः आपको इसके अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे। इससे आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बिना किसी विघ्न बाधाओं के समाप्त होंगे। यदा कदा अल्प मात्रा में पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित होगा लेकिन किसी भी प्रकार से कोई हानि नहीं होगी। साथ ही इसके शुभ प्रभाव से आप उत्तम शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे एवं भाई बहनों का भी पूर्ण सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा अपना सम्पूर्ण जीवन सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत करेंगे।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ होगा परन्तु इसके प्रभाव से विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है। विवाह अत्यन्त ही सुखद वातावरण में सम्पन्न होगा तथा इसमें आपको किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं विघ्नों का सामना नहीं करना पड़ेगा। शादी के पश्चात भी जीवन सुखी रहेगा लेकिन यदा कदा इससे पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित होगा परन्तु आपके सभी कार्य व्यवधान रहित सम्पन्न होते रहेंगे। आप जीवन में पूर्ण सुख तथा आनन्द की अनुभूति करेंगे।

आपकी कुण्डली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके सभी सांसारिक व्यापारिक तथा परिवारिक कार्य प्रायः निर्विघ्न रूप से समाप्त होंगे। अपने सभी कार्यों में आप सफलता प्राप्त करते रहेंगे। कभी कभी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके लाभमार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे तथा जीवन में आर्थिक रूप से प्रायः सुदृढ़ रहेंगे। साथ ही धनैश्वर्य से भी सुसम्पन्न रहेंगे। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आप उच्च शिक्षा को प्राप्त करने में सफल रहेंगे। तथापि यदा कदा कार्य में बाधाएं उपस्थित

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

होंगी परन्तु आप उसे दूर करने में सफल होंगे। साथ ही आपका पारिवारिक जीवन भी सुख एवं शान्ति से परिपूर्ण रहेगा। तृतीय भाव पर भी मंगल की दृष्टि होने से आप भाई बहनों से युक्त रहेंगे एवं जीवन में उनसे भी पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सौभाग्यशाली सिद्ध होंगे। मंगल के इस शुभ प्रभाव से आपका जीवन सुखद एवं आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को और अधिक सुखमय एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसी गैरमांगलिक या मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका उचित नियमानुसार मांगलिक दोष समाप्त हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप विवाह करेंगे तो आपका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। सभी प्रकार से आप जीवन में पूर्ण सौभाग्य, धनैश्वर्य एवं मान सम्मान प्राप्त करके समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में यश अर्जित करेंगे।

इसके अतिरिक्त जन्म पत्री मिलान के समय अष्टम भाव में ही यदि कन्या की जन्म कुण्डली में मंगल स्थित हो तो इसकी यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भावों में मंगल होने से आपके जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा पत्नी का स्वास्थ्य भी खराब रहेगा। अन्य भावों में स्थित मंगल शुभ प्रभावों में वृद्धि करेगा तथा आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः सावधानी पूर्वक सोच विचार कर अन्तिम निर्णय लेना चाहिए जिससे जीवन में किसी भी प्रकार से अशान्ति या कष्ट उत्पन्न न हो सके।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में महापद्म नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को प्रेम प्रसंग में प्रायः सफलता हस्तगत नहीं होती है। गृहस्थी जीवन सामान्य होते हुए भी आंशिक रूप से तनाव ग्रस्त हो जाता है। स्त्री मनोनकूल नहीं मिलती है। जातक के शरीर में समय-समय पर थोड़ा बहुत रोग व्याधि घेर लेती है। जातक को मानसिक परेशानियाँ भी लग जाती हैं और मन थोड़ा बहुत अशान्त रहता है। जीवन में शोक दुःख थोड़ा बहुत आता रहता है और मन में कभी-कभी निराशा की भावना जागृत हो जाती है। आत्मबल कमजोर रहता है। जातक यात्राएँ अधिक करता है पर सफलता आंशिक रूप में मिलती है। शत्रुगण समय-समय पर षडयन्त्र रचते रहते हैं। जिस कारण जातक को आंशिक रूप से नुकसान उठाना पड़ता है। जातक धर्मादि कार्य में विशेष रुचि नहीं रखता है और धर्म की आंशिक क्षति होती है।

इस योग के कारण जातक का स्वयं का चरित्र प्रायः सन्देहास्पद हो जाता है और राजदण्डादि का भय बना रहता है। इस योग से प्रभावित व्यक्ति को यदि सम्भव हो तो थल सेना में नहीं जाना चाहिए। समय-समय पर जातक बुरा स्वप्न भी देखता है। जिसमें सर्पादि भय होता रहता है। आर्थिक स्थिति सामान्य होती है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अच्छी दलील देने वाला एवं वकालत तथा राजनीति के क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- पंचम भाव का स्वामी नीच का होकर अष्टम भाव में स्थित है ।

आपकी कुण्डली में मंगल के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## ग्रह फल

### सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

### चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वाला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रुग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरों की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

करके सुखानुभूति करेंगे।

### मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थायी रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

### बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

### गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

## शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

## शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

मिथुन राशि में शनि हो तो जातक दुराचारी, कपटी, कामी, पाखण्डी, निर्धन, दुःखी एवं संकीर्ण मन वाला होता है।

## राहु

षष्ठभावे में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराक्रमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

## केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ढग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूल-प्रेतों की जानकारी द्वारा ढगने वाला होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु  
( 13/01/2020 - 12/01/2038 )

राहु की महादशा 13/01/2020 को आरम्भ और 12/01/2038 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु षष्ठम भावम में स्थित है। राहु की दृष्टि बारहवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगलदशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको मामूली स्वास्थ्य-समस्या, छोटी यात्रा तथा अचानक परिवर्तन ओर छोटे भाई-बहनों से लाभ मिला होगा। राहु की इस दशा में आपको विरोधियों पर विजय, नौकरी में लाभ और स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्याएं होंगी।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किन्तु किसी अन्तर्दशा में स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्या हो सकती है। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप वातरोग, संक्रामक रोग, चर्मरोग, रक्त की समस्या, स्नायविक दुर्बलता आदि से ग्रसित हो सकते हैं। आप जीवन में सन्तुलन अपनाकर उत्तम स्वास्थ्य का आनन्द लेंगे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपको शत्रु और विरोधियों पर विजय और उनसे लाभ मिलेगा। सट्टे में भी लाभ हो सकता है। निवेश लाभदायक सिद्ध होगा। अदालती मामले मुकदमे में फैसला आपके हक में होगा। बारहवें भाव पर राहु की दृष्टि के फलस्वरूप कुछ व्यय होगा। इसलिए उचित आर्थिक प्रबन्धन की आवश्यकता है। जीविका और व्यवसाय के लिए विज्ञान, विमान-उड्डयन, कम्प्यूटर-प्रोग्रामिंग, दवा, यातायात, ज्योतिष, रेडियोग्राफी आदि का चयन कर सकते हैं। रसायन, इग्स, एण्टीबायोटिक्स, चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। सेवारत लोगों को लाभ, शत्रुओं पर विजय, सम्मान तथा सहयोगियों और वरिष्ठ कर्मचारियों का सद्भाव मिलेगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के लाभ में वृद्धि और व्यापार का विस्तार होगा। आपके व्यवसाय और जीवन-वृत्ति में अच्छी प्रगति होगी।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

आप अपने आवास में परिवर्तन कर सकते हैं। आपको वाहन का सुख मिलेगा। आप जमीन-जायदाद की खरीद-बिक्री करेंगे। इस दशा के दौरान और खासकर मंगल की अन्तर्दशा के दौरान अक्सर छोटी यात्राएं होंगी। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान दूर की यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप सभी परीक्षाओं और प्रतिस्पर्धाओं में सफल होंगे। आप को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। विज्ञान, दवा, विमान इंजीनियरिंग और सभी

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

बौद्धिक-कार्यों में आपकी रुचि होगी। राहु शनि की राशि में स्थित है, इसलिए आप गम्भीर विषयों के अध्ययन में रुचि लेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को लाभ तथा कुछ परिवर्तन होगा। उन्हें आपकी सहायता व मार्गदर्शन की जरूरत होगी। आपके जीवन साथी की अवांछित यात्रा, व्यय तथा कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी। परिवार के साथ मधुर सम्बन्ध बनाए रखने के लिए आपको व्यवहार-कौशल तथा धैर्य से काम लेना होगा। आपकी माता की छोटी यात्रा होगी, संबंधियों से सहायता तथा सुख की प्राप्ति तथा स्वास्थ्य उत्तम होगा जबकि आपके पिता का तीर्थाटन होगा और सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की जमीन-जायदाद में वृद्धि, सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति तथा जीविका में उन्नति होगी जबकि बड़े भाई-बहनों का कुछ परिवर्तन, अचानक लाभ तथा अप्रत्याशित विकास होगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपकी विरोधियों पर विजय और मामूली स्वास्थ्य-समस्या होगी। गुरु की अन्तर्दशा में जमीन-जायदाद में वृद्धि, व्यापार में लाभ तथा शादी होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान उत्तम शिक्षा तथा बच्चों से सुख मिलेगा किन्तु, कुछ बाधा आ सकती है। बुध की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, सफलता ओर सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान यात्रा, सम्पत्ति तथा समृद्धि होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में व्यय तथा दूर की यात्रा होगी। चन्द्र के फलस्वरूप हर प्रकार का लाभ मिलेगा जबकि मंगल अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा, स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या ओर परिवर्तन होगा।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

**अंतर्दशा :- राहु - शनि  
( 18/02/2025 - 25/12/2027 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 13/01/2020 को प्रारंभ होकर 12/01/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 18/02/2025 को प्रारंभ होकर 25/12/2027 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 9, 1, 4 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप नीतिवान और उद्यमी होंगे। आपके जीवनसाथी आपके ऊपर हावी हो सकते हैं। विदेश में निवास हो सकता है या वहां जायदाद खरीद सकते हैं। बहरेपन और उदरशूल से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

शनि जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है, शुभफल अवश्य मिलता है, मगर कुछ देरी से।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए नीलम चांदी या सोने की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार के दिन पूजा के बाद दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में, अंगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल में धोकर शनि के वैदिक मंत्र का उच्चारण करते हुए धारण करें।

**अंतर्दशा :- राहु - बुध  
( 25/12/2027 - 14/07/2030 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 13/01/2020 को प्रारंभ होकर 12/01/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 25/12/2027 को प्रारंभ होकर 14/07/2030 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। अष्टम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी आय उत्तम होगी, विरासत में भी धन प्राप्त हो सकता है। विभिन्न विषयों के विद्वान बन सकते हैं। व्यवहार शिष्ट होगा। स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है, अतः सावधानी आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

**अंतर्दशा :- राहु - केतु  
( 14/07/2030 - 01/08/2031 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 13/01/2020 को प्रारंभ होकर 12/01/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 14/07/2030 को प्रारंभ होकर 01/08/2031 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

राहु और केतु छाया ग्रह हैं। इनकी स्वयं की कोई राशि नहीं होती। सामान्यतः इन्हें अशुभ समझा जाता है परंतु वास्तव में ये शुभ या अशुभ, कुंडली में अपनी स्थिति के अनुसार होते हैं।

इस अवधि में आप व्यर्थ में इधर-उधर भटक सकते हैं। निम्न वर्ग के लोगों से मित्रता हो सकती है। व्यर्थ भटकने के कारण पुरखों से मिली जायदाद की हानि हो सकती है, अतः सावधान रहना आवश्यक है। केवल अपने स्तर के लोगों से ही मित्रता रखना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- गरीबों को और मंदिर में कंबल बांटें
- कुत्तों को भोजन दें
- भूरा कुत्ता पालें और उसे नियमित रूप से भोजन दें

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382